RNI No. MPHIN/2004/14249
पोस्टल रजि.नं.- मालवा डिवीजन /337/2014-2016
ISSN 2349-7521

मासिक

अक्षर वार्ता

AKSHAR WARTA

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

वर्ष -12 अंक - 08 मई 2016 मूल्य : 25 रूपये Vol - XII No - VIII May 2016

05-12-16

Aksharwarta publications

वर्ष-12 अंक-08 मई 2016
Vol-XII No-VIII May 2016

ISSN 2349 - 7521

प्रधान सम्पादक
प्रो.शैलेन्द्रकुमार शर्मा
email :
shailendrasharma1966@gmail.com
सम्पादक
डॉ.मोहन बैरागी
email :
aksharwartajournal@gmail.com
प्रबंध संपादक
ज्योति बैरागी

मासिक
अक्षर वार्ता
AKSHAR WARTA
कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अनुक्रम

01.	आधुनिक सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का वेदान्तिक समाधान	प्रो. बलराम सिंह डॉ. अपर्णा धीर	07
02.	हिन्दी कथा-साहित्य में दलित चेतनाः एक अध्ययन	डॉ.मीनाक्षी दुबे	10
03.	हरिनारायण व्यास : जीवन और व्यक्तित्व	डॉ.लक्ष्मीचन्द मालवीय	16
04.	मधु कांकरिया के उपन्यासों में नारी समस्या	सपकाल कमलेश दगडू	18
05.	सूर्य का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप	डॉ.धनञ्जय मणि त्रिपाठी	21
06.	सूफी कवियों की प्रेम साधना	डॉ.एम.एच.सिद्दीकी	25
07.	रीतिकालीन काव्य एवं मालवा का लोकनाट्य 'माच'	प्रियंका शर्मा	27
08.	रंग रंगीले राजस्थान का एक त्यौहारः गणगौर	नम्रता ओझा	30
09.	अलवर में राजनैतिक जागृति (प्रजामण्डल आंदोलन)	डॉ.मधुसूदन कलावटिया	34
10.	रीतिकालीन शास्त्रीय नृत्य की विकास-यात्रा	प्रियंका शर्मा	37
11.	जन्मकुण्डली के अनुसार भूमि,भवन एवं स्वगृह सुख	कविता मेहता	41
12.	**Modern World : Yoga And Stress Management**	**Archana Baser**	44
13.	पुस्तक समीक्षा	डॉ.मोहसिन ख़ान	48

आवरण - इंटरनेट

संपादक मण्डल -
डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे),श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए),डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा),डॉ. जय वर्मा (यू.के.),प्रो. टी.जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरु),प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़),प्रो. आरसु (कालिकट),डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन),डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली),प्रो. राजश्री शर्मा (उज्जैन),डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर) ,प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन),डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस)

सहयोगी सम्पादक - डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक),डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश),डॉ. अनिल सिंह,मुंबई,डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र),डॉ. अनिल जूनवाल (म.प्र.),डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान),डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी),डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा),डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात)

सह सम्पादक - डॉ. भेरुलाल मालवीय,डॉ.मीनाक्षी दुबे (भोपाल),डॉ.माला मिश्र (दिल्ली),डॉ. रेखा कौशल,डॉ. पराक्रम सिंह,रूपाली सारये

कला संपादन : अक्षय आमेरिया

संपादकीय कार्यालय पता-
संपादक,अक्षर वार्ता,
43,क्षीर सागर,द्रविढ
मार्ग,उज्जैन,मप्र.456006,भारत
फोन :- 0734 25 50 150
मोबा :-+ 918989547427

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

• शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिए। • हिन्दी माध्यम के शोध-पत्रों को कृतिदेव 010 या युनिकोड मंगल फोंट (Kruti Dev 010) में टाईप करवाकर 'माइक्रोसाफट वर्ड' में भेजें। • अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाइम्स न्यू रोमन (Times New Roman), एरियल फोंट (Arial) में टाइप करवाकर 'माइक्रोसॉफ वर्ड' में भेज सकते है। • शोध-पत्र की सॉफ्टकॉपी 'अक्षरवार्ता' के ईमेल आईडी पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी, शोध-पत्र के मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर 'अक्षरवार्ता' के कार्यालय को प्रेषित करें। • Please Follow- APA/MLA Style for formatting • अक्षरवार्ता की सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 300 सौ एवं पंजीयन शुल्क प्रतिशोधप. रुपये एक हजार का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है- बैंक : Corporation Bank, Branch- Rishi Nagar,Ujjain, IFSC- CORP0000762 ,Account Holder- **Aksharwarta**, Current Accont NO. 076201601000018 भुगतान की मूल रसीद, शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय पते पर भेजना अनिवार्य है।

ISSN 2349 - 7521

आधुनिक सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का वेदान्तिक समाधान

प्रो. बलराम सिंह
डॉ. अपर्णा धीर

वर्तमान समाज में दिन-प्रतिदिन चर्चित जाति-विषयक मतभेद तथा दलित-समुदाय के प्रति भेदभाव की भावना की गूँज निश्चित ही विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के पतन का कारण हो सकता है। यह कैसी विडम्बना है? जिस देश में उसमें रहने वाले सभी मानव 'तस्मान्मानव्यः प्रजा उच्यन्ते' (तैत्तिरीय-संहिता 1.5.1.3) 'प्रजा' माने जाते थें और बिना किसी भेदभाव के परम एक तत्त्व 'परमात्मा' से उत्पन्न कहे जाते थे, आज वही 'प्रजाजन' इस प्रकार के भेदभाव से जूझ रहे हैं। यहाँ 'परमात्मा' से अभिप्राय वैदिक चिन्तन के 'ब्रह्मा' से है। औपनिषदिक दर्शन के अनुसार ब्रह्मा ने एक से अनेक होने की इच्छा की 'एकोऽहम् बहुस्यामि'। इस वैदिक विचार से भारतीय संस्कृति को जानने वाले चाहे इतिहासकार हो या साहित्यकार सभी भली-भाँति परिचित हैं। इस विचारधारा के प्रथम दर्शन वर्णव्यवस्था के रूप में ऋग्वेद-संहिता में होते हैं- 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद.....पदभ्यां शूद्रो अजायत' (10.90.12)। जहाँ ब्रह्मा ने अपने शरीर के विभिन्न अङ्गों से ही अपने समस्त प्रजाजन की उत्पत्ति की और उनको गुण, योग्यता, क्षमता के आधार पर विभिन्न संज्ञाओं द्वारा पुकारा। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भी स्पष्टतः कहते है कि मेरे द्वारा गुण और कर्मों के आधार पर इन चार वर्णों का समूह रचा गया है 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः' (4.13)। अतः समता-भाव की दृष्टि से जिस प्रकार शरीर के सभी अङ्ग शरीर के सुचारु कार्य-प्रणाली के लिए महत्त्वपूर्ण है, उसी प्रकार भारतीय समाज की सुचारु कार्य-शैली एवं उनन्ति हेतु समाज के सभी वर्गों का विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण स्थान है।

सभी वर्णों में से मुख्यतः शूद्र वर्ण 'सेवकवर्ग' एवं 'शिल्पकार' कहलाता हैं, जिन्हें उनके द्वारा दी गई सेवाओं के लिए वेतन या अनाज दिया जाता है। 'परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभवजम' (18.44), इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने सेवा करना शूद्रों का भी स्वाभाविक कर्म कहा। 'सेवा' को भली-भाँति समझने हेतु परि उपसर्ग से बने 'परिचर्या' शब्द को जानने की आवश्यक्ता है। 'परि' का अर्थ है चारों ओर। अब प्रश्न है किसके चारों ओर? उत्तर के रूप में कह सकते हैं- 'अपने ही चारों ओर' यथा- मेरे चारों ओर मेरे अपने 'मेरा परिवार' कहलाता है। इसी प्रकार 'परिचर्या' शब्द के यहाँ शूद्र के साथ आने से उसका अभिप्रायः हुआ कि शूद्र के चारों ओर उसके अपने। अतः किसी दूसरे की नहीं अपितु अपने चारों ओर फैले हुए अपने परिजनों की सेवा करना। सामान्यतः बोल-चाल की भाषा में 'परिचर्या' शब्द का ग्रहण 'समाज की सेवा' अर्थ में लिया जाता है। अपनत्व की भावना पारस्परिक होती है एक तरफा नहीं इसीलिए इस रीति की परिकल्पना व्यवहार के लिए समाज में अपनत्व की भावना से की गई है। जिसे आज समाज विस्मृत कर चुका है। इसका दायित्व सभी वर्णों पर है केवल शूद्रों पर नहीं। ऐसे विचार और व्यवहार 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परिकल्पना में पलते हैं। इसी कारण सेवकवर्ग में चिकित्सक, अध्यापक, संगीतकार, कृषक, नर्तकी, नाविक, कलाकार आदि आते हैं तथा शिल्पकार में लोहार, कुम्हार, बढ़ई, रथकार, सुनार, सूतकार, धोबी, नाई, चमार आदि आते हैं। इसी आधार पर समाज को सेवा प्रदान करने वाले ये सभी यदि सरकारी नौकरी में हों तो 'Government Servant' कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त द्रष्टव्यः है कि श्रीकृष्ण ने उपरोक्त श्लोक में 'अपि' शब्द का प्रयोग किया है। जिससे अभिप्राय हुआ सेवा करना शूद्रों का भी नैसर्गिक स्वभाव होना चाहिए। इस प्रकार यह श्लोक इङ्गित करता है कि जिस प्रकार ब्राह्मण वर्ग अपनी बुद्धि के आधार पर, क्षत्रिय वर्ग अपने बाहु बल के आधार पर और वैश्य वर्ग वाणिज्य के आधार पर समाज के प्रति अपनी-अपनी सेवा प्रदान करते हैं और समाज को उन्नत बनाते हैं, उसी प्रकार शूद्र वर्ग को भी अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार समाजिक उनन्ति के लिए अपनी सेवाएँ देनी चाहिए। सेवा करना सभी वर्णों का कर्त्तव्य माना गया है केवल शूद्रों का नहीं। अतः कह सकते है कि समाज के सभी वर्ग बराबर हैं और समाजिक प्रगति हेतु सबकी बराबर भागेदारी है।

वस्तुतः ये सभी सेवकवर्ग एवं शिल्पकार 'प्रजा' कहलाते हैं। 'प्रजा' शब्द प्र उपसर्ग और जन् धतु से निष्पन्न है, जिसका शब्दिक अर्थ है प्रबुद्ध सृजन-कर्त्ता। इसी सृजनात्मक विशेषता के कारण ब्रह्मा को प्रजापति कहा जाता है और कुछ सामाजिक वर्ग भी

निदेशक, एवं असिस्टेन्ट प्रोफेसर, इन्स्टिटयूट ऑफ ऐड्वान्स्ट साइान्सीस, डार्टमोथ, एम.ए., यू.एस.ए.

अपने नाम के साथ प्रजापति जोड़ते हैं। वर्तमान समाज में विवाह में नाई, माली की; शिशु के जन्म पर धोबी की भूमिका इत्यादि इस दृष्टि से देखने को मिलती है कि इनका एक आशीर्वादीय उच्च स्थान है जबकि ये प्रजावर्ग या शिल्पी आधुनिक काल में अन्य पिछड़े वर्ग (OBC) के अन्तर्गत आते हैं। यह एक विडम्बना है कि प्रजावर्ग का शास्त्रीय एवं समाजिक उच्च स्थान होने के उपरान्त भी आज समाज में उनकी पिछड़े वर्ग जैसी दशा हो चुकी है। क्या इसका कारण आर्थिक, सामाजिक, अथवा राजनितिक है? इस पर निश्चित ही विचार-विमर्श की आवश्यक्ता है।

लोकतंत्र आधुनिक जीवन-प्रणाली का दर्शन माना गया है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसमें दो लोकतांत्रिक परम्पराओं का वास है। (1) लोकतंत्र की आधुनिक संस्कृति 1940 में नेहरूवादी आदर्श 'गणतंत्र' के रूप में प्रचारित हुई और (2) 'प्रजातंत्र' के रूप में, जो कि लोकतंत्र से सारांशिक रूप में भिन्न है। सभी के प्रति हित एवं कल्याण की भावना से जनता के द्वारा किया जाने वाला जनता का ही शासन 'प्रजातंत्र' कहलाता है। 'प्रजातंत्र' लोकतंत्र की कल्पना का वैदिक अग्रदूत ही नहीं वरण मूलभूत है। आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था में 'गणनायक' को ही सम्पूर्ण शक्ति व अधिकार होते हैं जबकि वेदान्तिक प्रजातंत्र में मात्र प्रजाजन को निणर्य का अधिकार दिया है। इसके परोक्ष में एक गहन एवं व्यवस्थात्मक रहस्य था जोकि आज भी प्रासंगिक है।

वास्तव में आत्मनिर्भर,स्वावलम्बी एवं स्वतन्त्र व्यक्ति ही अपनी बात सबके समक्ष दढ़तापूर्वक रख सकता है। लेकिन आज की परिस्थितियों में कई ऐसे प्रजावर्ग हैं, जिनका मानना है कि उन्हें समान अधिकार नहीं दिये जाते। ऐसी स्थिति में आज हमें जरूरत है, अपनी वैदिक परम्पराओं को पुनः याद करने की। हम सभी जानते हैं कि वैदिक-चिन्तन में (ब्रह्मा) प्रजापति एवं विश्वकर्मा वस्तुतः स्रष्टा अथवा सृजन-कर्त्ता कहे जाते हैं क्योंकि वे प्राणियों के रचयिता अथवा सृष्टि के रचयिता माने जाते हैं। इस प्रकार ये दोनों प्रजापति एवं विश्वकर्मा संसार के स्वामी कहलाते हैं। यही विचार आधुनिक-चिन्तन में भी दृष्टिगोचर होता है, जहाँ प्रजावर्ग अपने कला-कौशल के आधार पर सृजनकर्त्ता हैं। इनमें लोहार, कुम्हार, बढ़ई, नाई, धोबी आदि शिल्पकार आते हैं। इस तथ्य को ऐसे भी जाना जा सकता है कि जिस प्रकार ब्रह्मा (प्रजापति) ने सम्पूर्ण मानवजाति की रचना अग्नि, जल, वायु, पृथिवी और आकाश इन पाँच तत्त्वों के सम्मिश्रण से की, उसी प्रकार प्रजापति के रूप में कुम्हार भी इन्हीं तत्त्वों के मिश्रण से अनेक प्रकार के बर्तन इत्यादि बनाते हैं। अतः सृजनकर्त्ता अथवा स्रष्टा के रूप में 'कुम्हार' प्रजा के लोग अपने नाम के साथ 'प्रजापति' उपनाम लगाते हैं तथा 'लोहार, बढ़ई, सुनार' प्रजा के लोग अपने नाम के साथ 'विश्वकर्मा' उपनाम लगाते हैं। इस दृष्टि से अर्थात् प्रजापति, विश्वकर्मा आदि उपनाम लगाने से आधुनिक युग में प्रजावर्ग को 'समाज का स्वामी' कहा जा सकता है। विषय-विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि कुम्हार, लोहार आदि प्रजावर्ग अपने कला-कौशल द्वारा समाज के अन्य वर्गों की सेवा करते हुए भी समाज के स्वामी कहलाये जा सकते हैं। अतः सेवकवर्ग एवं शिल्पकार को समाज का निर्माता कहना अतिशयोक्ति न होगी।

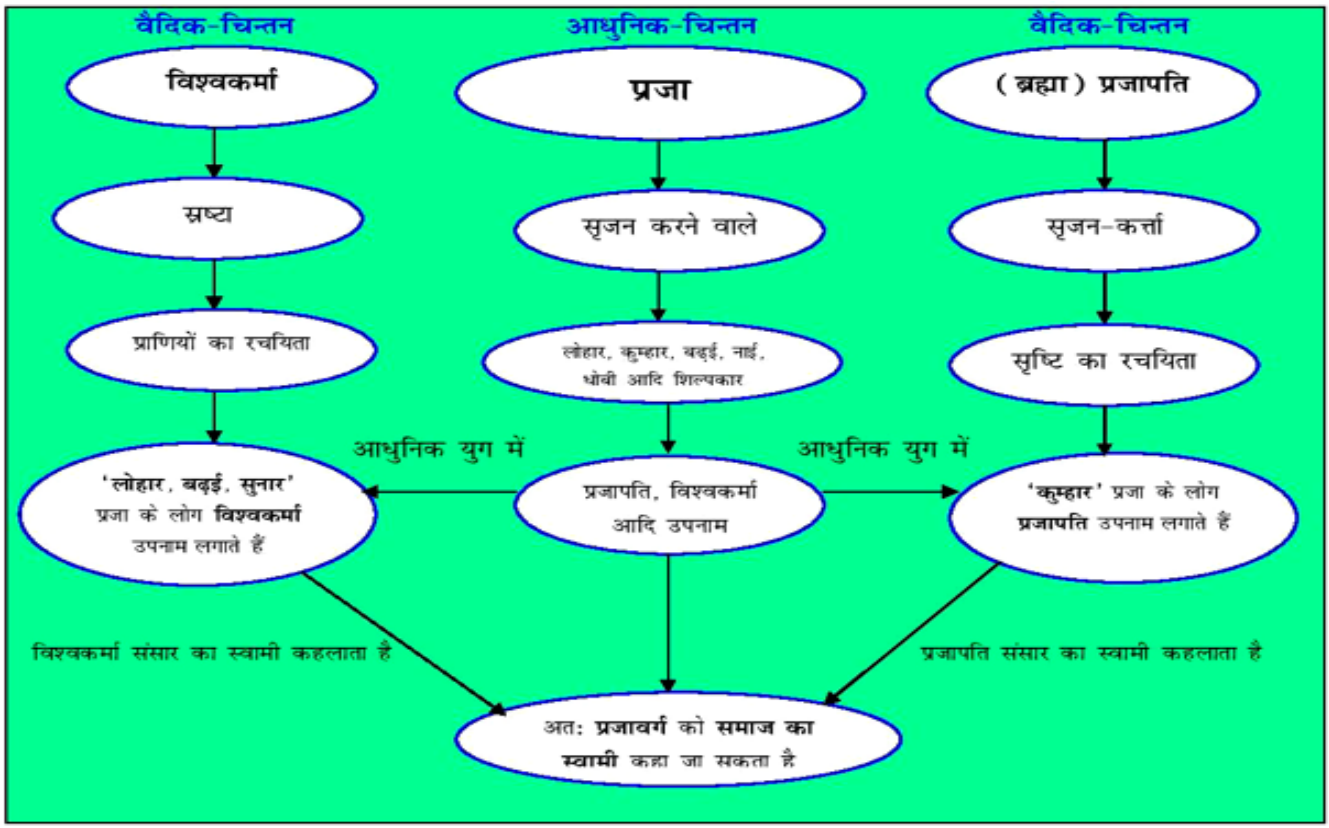

निष्कर्ष एवं भावी-योजना - शिक्षा द्वारा परिमार्जित प्रजावर्ग आत्मनिर्भर, स्वावलम्बी एवं स्वतन्त्र हो सकते हैं। प्रजा को इन जीवन-लक्ष्यों की प्राप्ति हो, यही प्रजातंत्र का उद्देश्य है। हमें ऐसी शिक्षा-प्रणाली विकसित करनी चाहिए, जिससे आधुनिक प्रजा यथा- जैव-प्रौद्योगिक, इंजीनियर, अध्यापक, उद्यमी, सूचना-प्रौद्योगिक, संगणक-व्यावसायिक, वैद्य आदि अपनी सृजनात्मक सेवाओं द्वारा आत्मनिर्भर होकर मुक्त हों। इस प्रकार कला-कौशल (शिल्पकार) प्रजा स्वावलम्बी होने के कारण अपने मत रखने के लिए स्वतन्त्र बन सकते हैं। आत्मनिर्भर प्रजा के मतों के आधार पर की गई प्रजातांत्रिक-राजनीतिक व्यवस्था में प्रजा की प्रबल भूमिका को जागृत करना ही इस शोध का उद्देश्य है। इसी आधार पर समाज की स्वार्थपरक राजनीतिक-व्यवस्था को रोकना सम्भव है।

(बॉये से) -
पोस्टर पर विचार-विमर्श करते हुए जिज्ञासु दर्शक, प्रो.बलराम सिंह एवं डॉ. अपर्णा धीर
इस लेख में रखे गये विचार जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के संस्कृत केन्द्र द्वारा आयोजित '22वें वेदान्त' सम्मेलन, दिसम्बर, 2015 में पोस्टर के रूप में प्रदर्शनी में प्रस्तुत किये गये थे।

आभार - इस शोध-कार्य का कुछ हिस्सा उबरॉय फांउडेशन द्वारा समर्थित है।